का पुट है, लेकिन यह सायास नहीं है। सिद्धार्थ के पास व्यंग्य-दृष्टि के साथ सेंस ऑफ विट और ह्यूमर भी है। मेरी राय में एक अच्छे व्यंग्यकार के पास वाग्विदग्धता और हास्य बोध होना चाहिए। सिद्धार्थ के व्यंग्य में समायी हंसी मनोरंजन की हंसी नहीं है। उसमें साहस और उपहास का भाव है। गलत को गलत कहने का साहस, फिर गलत का मजाक उड़ाने का भाव। एक टीस। उस हंसी का आंतरिक अर्थ पाठक को नए सिरे से सोचने पर विवश करता है । सुशीलजी के लेखन में बौद्धिक गहराई और ऐतिहासिक चेतना के अतिरिक्त युगीन सच्चाइयों से मुठभेड़ करने का साहस है। उन्होंने व्यंग्य लेखन में एक नए ट्रेंड को जन्म दिया है। शब्द-शक्ति पर उनका बड़ा भरोसा है। उन्होंने कई नए शब्दों को गढ़ा है। उनके पास एक चुटीली मुहावरेदार अर्थगर्भी भाषा है। उनके व्यंग्य में 'बिटविन टु लाइन्स' बहुत कुछ होता है। जो अनकहा है, वही कहे गए की ताकत है ।

□□

सम्पर्क : *पता-81, बैराठी कालोनी नं. 2, इन्दौर (म.प्र.) मो.नं. 098938-10050*

समय के जटिल यथार्थ में स्त्री विमर्श की अर्थमयता का विस्तार

□ प्रताप दीक्षित

1. उत्सव के रंग (कहानी संग्रह), लेखक : नमिता सिंह, प्रकाशक : साहित्य भंडार 50 चाहचांद, इलाहाबाद,

2. दस प्रतिनिधि कहानियां (कहानी संग्रह) लेखक : सुधा ओम धींगरा प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, पी. सी. लैब, बस स्टैंड, सीहोर (म.प्र.)

हिन्दी कहानी के अनवरत सफर में महिला कथाकारों का अप्रतिम योगदान रहा है, संप्रति, महिला कथाकारों द्वारा सृजित साहित्य के दो छोर दिखाई देते हैं। एक तरफ रचनाओं के केंद्र में स्त्री की समस्याएं, उसके देह केन्द्रित शोषण के विविध रूप और प्रतिरोध हैं। दूसरी और महिलावादी लेखन की छाप न लग सके इसके लिए सतर्कता और महिला-पुरुष लेखन की विभाजक रेखा को समाप्त करने की तत्परता, समीक्ष्य संग्रहों में कहानी की नई जमीन की तलाश की गई है। कहानियों में स्त्री की विवशताओं के साथ वे अन्याय और विसंगति का प्रतिवाद करती हैं। उनका प्रतिरोध पुरुष वर्चस्व वाली व्यवस्था के विरोध के साथ सामाजिक विषमता एवं अन्याय के विरुद्ध शोषित आदमी की चीख है।

गहन अंधेरे में प्रतिरोध की रोशनी से रास्तों की तलाश

नमिता सिंह का नाम साहित्य के साथ सामाजिक कार्यों के लिए भी जाना जाता है. उनकी कहानियों में सामजिक-आर्थिक विषमता, जातिवाद, सांप्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष, मानवीय जिजीविषा, संवेदना के विविध रूपों के साथ प्रखर वर्ग चेतना है। इन कहानियों में स्त्री जीवन के विभिन्न आयाम हैं। स्त्री की स्वायत्तता, स्वनिर्णय के साथ प्रेम, दांपत्य, सामजिक- आर्थिक-धार्मिक गैरबराबरी, पक्षपात, शोषण के प्रतिरोध की जमीनी हकीकत को दृष्टि में रखते हुए उसकी अस्मिता को नए आयाम दिए हैं। कहानियों के कथ्य में विषय वैविध्य है।

'गांठ' में केवल अर्चना की मां की बीमारी की गांठ नहीं, स्त्री के जीवन की तहों में पर्त-दर-पर्त दबी अनेक गांठें हैं- संकोच, संस्कार, अकेलेपन की, जिन्हें वह कभी नहीं उघाड़ती दामाद के घर में रहते ऊपरी तौर पर उपेक्षा नहीं दिखाई देती, लेकिन दैनिक व्यवहार में छोटी-छोटी बातों के माध्यम से झलक जाता है, इस उम्र में मुश्किल होता है जीवन की गति में परिवर्तन। 'पौधा तो उखाड़ कर फिर से रोपा जा सकता है, दरख्त नहीं।' कहानी के अंत में बेटी अर्चना का अपराधबोध केवल बेटी का नहीं एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति भी है। 'लाइन ऑफ कंट्रोल' बताती है कि देशों के बीच सीमा रेखाओं के पीछे की लड़ाई राजनेताओं के आपसी सत्ता संघर्ष-वर्चस्व का नतीजा ज्यादा होता है। इसी प्रकार पुरुष वर्चस्व वाली सामाजिक रूढ़ियों ने स्त्रियों को इस प्रकार अनुकूलित किया है कि उन्होंने कुलीनता, पवित्रता, संस्कारों के नाम पर छुआ-छूत, मासिक के दिनों में निर्वासित दिनचर्या, जाड़े के दिनों में बार-बार नहाना, एकवस्त्रा होकर रसोई बनाने के पाखण्ड को अपनी लाइन ऑफ कंट्रोल बना लिया है। शहरी आभिजात्य समाज से अलग 'बंतो' ग्रामीण परिवेश की एक अनपढ़ लड़की के विद्रोह, असहमति और आत्मनिर्णय की कहानी है। अभाव और पिता के न रहने के बाद उसे बूढ़े बलबीर से ब्याह दिया जाता है। उसकी रोल मॉडल तो उसके गांव की मास्टरनी है जो 'बहुत बड़ा काम कर रही है'। पति बलबीर की आकस्मिक मौत के बाद वह सास के निर्देशानुसार वंश चलाने के लिए देवर से सम्बन्ध बनाने से इनकार कर उसे लगता कि उसने नम्बरदार को बिना भैंस खोले वापस खदेड़ दिया है। 'परिचय' उस छवि से मुक्ति की सशक्त मनोवैज्ञानिक रचना है जो पुरुष ने स्त्री के सम्बन्ध में गढ़ रखी है। शालिनी के पति प्रो. दिनेश एक शांत, व्यावहारिक, समझदार, दुनियादार, पढ़ने-लिखने में मशगूल पति हैं। अपने काम से काम, तभी वह सहकर्मी डां सिंह के नौकर हरिया की गुमशुदगी के विषय में

जानते हुए भी कुछ नहीं बताते। जिसके सम्बन्ध में अफवाह है कि डा. सिंह ने उसकी हत्या कर लाश गायब कर दी है, उनके समाज में छापा पड़ना सम्पन्नता का सबूत है, उनके लिए यूनिवर्सिटी में स्त्रियों के प्रति भेदभाव ऐसी बातें 'न जानना' एक प्रकार से गर्व की बात' है। प्रो. दिनेश ने पत्नी को चारु, जिसका रिश्ता उनके लिए आया था, के सम्बन्ध में 'इतना कुछ' बता रखा है। ऐसी लड़कियां घर-परिवार लायक नहीं होतीं। परंतु जब शालिनी सीधी-सादी चारु से मिलती है, उस चारु से जो सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई है, जो पड़ोस में हुई दहेज हत्या के खिलाफ गवाही दे रही है, तब शालिनी को लगता है उसका परिचय उसके अपने अन्दर बरसों पहले सो चुकी स्त्री से हुआ है जो अब जाग गई है. कहानी बौद्धिक समाज के दोहरे जीवन मूल्यों की विडंबना उजागर करती हैं।

स्त्री की नियति केवल वंश चलाने की है। 'कोख' इस विडम्बना को प्रश्नांकित करती है कि स्त्री की परिधि को नियंत्रित करने की प्रविधि पौराणिक काल से ही हमारी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा बन गई है। महाभारत काल में व्यास द्वारा नियोग से संतान उत्पन्न करने के लिए अंबा-अंबालिका की असहमति का कोई मूल्य नहीं। यह व्यास नहीं सम्पूर्ण पुरुष सत्ता की दर्पोक्ति है 'प्रेम, संवेदना सब दर्शन के वाक्विलास हैं। भ्रम हैं। - - बुद्धि और तर्क स्त्रीधर्म में अंगीकार नहीं किए जाते। संवेदना और भावुकता सबसे बड़े शत्रु हैं।' पुरुष जब चाहे स्त्री को स्वीकार करे और जब चाहे मना कर दे। एक बार रिश्ता ठुकराने के वर्षो बाद जब पुन: विनय विवाह के लिए कहता है तब लड़की को मंजूर नहीं। उसका जवाब है, 'तुम्हारे इनकार ने मुझे अपने को पंहचानने का अवसर दिया। - -मुझे यह रिश्ता कबूल नहीं।' स्त्री की दुश्वारियों, शोषण, विवशता और करुणा के अंतर्द्वंद्व की कहानी है 'घर'। घर उसका अंतिम शरण्य है, लेकिन उसका अपना नहीं होता। रेशमा पतिगृह में पति और उसके परिजनों द्वारा उत्पीड़ित और शारीरिक हिंसा का शिकार है. एक सामजिक संस्था द्वारा पुलिस में शिकायत करने पर पति, सास और जेठ को बंद कर दिया जाता है। अब वही रेशमा संस्था में आकर पति और परिजनों को छुड़ाने की गुहार लगा रही है। उसके अन्दर की करुणा है या विवशता 'औरत के लिए घर कितना जरूरी होता है। घर की चारदीवारी से निकल कर दूसरी चारदीवारी चाहिए। 'सड़क पर तो कुत्ते नोच कर खा जाएंगे।' कहानी जाने कितने अनुत्तरित प्रश्न समाज और व्यवस्था के नियामकों के सामने उठाती है।

अपराध जगत में वर्चस्व की दुनिया एक ऐसा चक्रव्यूह है जिससे वापसी संभव नहीं। न चाहते हुए भी इसमें प्रवेश, पछतावे, पुनर्विचार की स्थितियों की मनोवैज्ञानिक कहानी है 'वारिस'। कहानी का नायक (खलनायक) अपने अंतिम दिनों में नहीं चाहता कि उसका पुत्र इस दुनिया में शामिल हो। लेकिन वह अब वह अवश है. जातिवादी सोच हमारी रगों में पैबस्त हो चुका है। आरक्षण की व्यवस्था सत्ता प्राप्ति का साधन भर हैं। इसका दंश केवल महसूस किया जा सकता है। 'कोचिंग' की रीता ऐसी लड़की की कहानी है जो इस अग्निपथ से निकल कर जनसमूह में भीड़ का हिस्सा बनाने से इनकार कर अपनी पहचान स्वयं बनाती है। 'डाल से टूटे' उस दूषित मानसिकता की कहानी है जहां एक राज्य के लोगों को उनके नाम के कारण संदेह के घेरे में ले लिया जाता है। मजहबी जुनून और दंगों की आड़ में किया गया जुर्म बहादुरी कहा जाता है। टूटते सपनों के बीच फीरोज और अतुल जैसे लोग उम्मीद के चिराग बन कर रोशनी देते हैं। 'तीन मुलाकातें' और 'अपने ठिए पर 'साहित्य जगत के अंतर्विरोध, विमर्श के नाम पर स्वार्थ और लिप्सा की पूर्ति, अवसरवादिता, जोड़-तोड़, गुरुडम, विचलन और पतन उजागर करती हैं। विपर्यय की त्रासदी है कि 'एक क्रांतिकारी कवि' की सोच जातिवादी हो जाती है अथवा 'क्रांतिकारिता' सदैव उसका मुखौटा भर था। दोनों कहानियों में साहित्य जगत के अनेक चेहरे जाने-पहचाने प्रतीत होते हैं।

प्रेम ऐसी शै है जो हमेशा साथ रहती है, भले ही हम देख न पाएं। जीवन की भाग-दौड़ में दिन कैसे निकल जाते हैं, पता नहीं चलता। आधी.से ज्यादा उम्र बीत जाने के बाद जीवन से दो पल चुनने और स्मृतियों के उपवन में जाने पर अभयकांत और विनीता का जीवन उत्सव में बदल जाता है। जरूरत सिर्फ उम्र की परछाइयों में अपने हिस्से में आए अंश को संजोने की होती है। 'उत्सव के रंग' यंत्रणादायी समय में आश्वस्ति से सुरभित करती है।

कहानियों में रचनाकार की सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता संवेदना के किसी बिंदु को ओझल नहीं होने देती। शिल्प की नवीनता और भाषा की सहज कलात्मकता कहानियों की पठनीयता बनाए रखती है।

भौगोलिक परिधियों से परे संवेदना की लोकधर्मिता

कला और साहित्य देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं। मनुष्य के दु:ख, सुख, आंसू, संवेदना सार्वभौमिक होते हैं। भावनाओं, राग, प्रवृत्तियों में भौगोलिक सीमाओं का अंतर नहीं होता। अपनी जमीन छोड़ कर विदेश गए या वहां बस गए लोगों का परिवेश बदल जाता है लेकिन मूल चेतना अपनी परम्पराओं, संस्कारों से विच्छिन्न नहीं होती। प्रवासी हिंदी कहानियों में सुधा ओम धींगरा की कहानियां अलग जगह बनाती हैं। अमेरिका में बसे प्रवासीजनों की समस्याओं, अंतद्वंद्व और सोच पर नयी और निरपेक्ष दृष्टि से विचार किया गया है।

स्त्री को संपत्ति-गुलाम समझने और नियंत्रित करने की

पुरुष प्रवृत्ति में, परिवेश-शिक्षा-समय में बदलाव के बावजूद, ज्यादा अंतर नहीं आया है। 'बेघर सच' इस मार्मिक प्रश्न को उठाती है कि स्त्री का घर कहां है? घोसले की तरह इसे बनाते दोनों हैं लेकिन पीढ़ी दर पीढ़ी यह होता केवल पुरुष का है। स्त्री के प्रेम, वफादारी, चरित्र को हमेशा प्रश्नांकित किया जाता है। रंजना और संजय दोनों स्टेट्स में वैज्ञानिक हैं। रंजना संजय से जज्बात साझा करना चाहती है, लेकिन वह बस पति ही बना रहता है, दोस्त कभी नहीं बन पाया। संजय पत्नी के चरित्र पर संदेह के कारण उसकी कलाकृतियों-मूर्तियों को तोड़ने लगता है। रंजना का आत्मसम्मान उसे पति के घर को छोड़ने के के लिए विवश कर देता है। 'क्षितिज से परे' में भी सारंगी पति सुलभ से चालीस वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद तलाक लेने के लिए विवश है। यद्यपि औरत कभी गृहस्थी तोड़ना नहीं चाहती जिसे उसने प्यार से संजोया है। लेकिन जब आत्मसम्मान टूटने की सीमा पार हो जाती है तब यही रास्ता बचता है। वस्तुत: स्त्री को अपमानित करने के पीछे पुरुष की कुंठा और मन की हीन भावना होती है। सारंगी का सौंदर्य, बढ़ती उम्र के बावजूद सौष्ठव, संयोजन क्षमता के कारण उसकी प्रशंसा संजय को कुंठित करती है। क्या पति के बिना औरत का वजूद बेमानी हो जाता है? दाम्पत्य, पुरुष की चाहत, पति-पत्नी के बीच संवादहीनता, पति के समलैंगिक संबंधो की जानकारी होने पर पत्नी की वितृष्णा ऐसे सवालों को केंद्र में रख कर गहन मनोविज्ञान की कहानी है। 'आग में गरमी कम क्यों है?' कहानी शेखर और साक्षी दोनों की अपनी अपनी विवशताओं और सीमाओं का अतिक्रमण न कर पाने की है।

समय के बदलाव में कानून द्वारा स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार दिए गए है। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के दौर में पुरुष भी स्त्री की प्रवंचना और शोषण का शिकार बनते हैं। विशेष रूप से अमरीका जैसे देश में ग्रीन कार्ड पाने के लिए वैवाहिक छल माध्यम बनता है। 'वह कोई और थी' में शिक्षित परंतु गरीब अभिनन्दन को स्टेट्स में बसे परिवार द्वारा उनकी बेटी सपना के पति के रूप में लाया जाता है। उन्हें पति के रूप में एक शो-पीस और घर की देखभाल करने वाला केयरटेकर चाहिए। अभिनन्दन सपना के प्रारम्भिक प्रेम में मुग्ध है। पत्नी और उसके परिवार के द्वारा लगातार उसकी अवहेलना और अपमान किया जाता है। उसे वर्क परमिट और ग्रीन कार्ड न लेने देने की धमकी दी जाती है। अंतत: अभिनन्दन साहस जुटता है. उसे ग्रीन कार्ड की परवाह नहीं। वह वापसी के लिए कदम बढ़ा देता है। 'पासवर्ड' में अमेरिका में रह रहे साकेत से भारत की तन्वी ने इसलिए विवाह किया है कि वह अमेरिका जा सके। अमेरिका आने पर तन्वी पूरी तरह बदल गई है। साकेत की अवहेलना और उपेक्षा उसके लिए आम बात हो गई है। वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने में अरुचि। साकेत सब कुछ स्वाभाविक रूप से ले रहा है। तन्वी अपने प्रेमी मनु के साथ, जो भारत से ही उसके साथ आया है, साजिश रचती और साकेत से तलाक ले लेती है। मुआवजे में साकेत से उसे पच्चीस हजार डालर का चेक और मंहगी कार मिलती है परंतु तकनीक में उन्नत देश में साकेत ने पूर्व पत्नी तन्वी और उसके प्रेमी मनु के खिलाफ षड़यंत्र रचने के अपराध के प्रमाण एकत्रित कर लिए हैं। पति के कंप्यूटर और बैंक का पासवर्ड पाने के क्रम में तन्वी जिन्दगी का पासवर्ड खो देती है।

राज्य की कल्याणकारी योजनाओं और सामजिक सुरक्षा के उपादानों की प्रचुर उपलब्धता युवा पीढी को काहिल और गैर जिम्मेदार भी बना देती है, यह कथ्य है। 'सूरज क्यों निकलता है?' 'विष-बीज' एक क्रूर बलात्कारी अपराधी की आत्मस्वीकारोक्ति है. विकृत मनोविज्ञान के आधार पर अपराध के कारणों को खंगालती कहानी। हिंसा और क्रूर परपीड़न प्रवृत्ति के बीज बचपन में पड़ जाते हैं। टूटते परिवार, बच्चे का लैंगिक उत्पीड़न, अभाव, प्यार की अतृप्त चाहत अनेक कारण होते हैं। कहानी के अंत में अपराधी का उद्बोधन है। घिनौने कृत्यों को रोकने के लिए स्त्री समाज को ही आगे आना होगा। एक बच्चे के मन में मां के प्यार की चाहत सब जगह एक सी होती है। पिता के न रहने पर बच्चे की अपेक्षा मां से ज्यादा बढ़ जाती है। उन्नत समाजों में पिता के न रहने पर मां अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए साथी चुन लेती है। ऐसे में बच्चे का अकेलापन बढ़ जाता है। वह अपना अलग संसार सृजित कर लेता है। 'टारनेडो' की क्रिस्टी और उसकी मां जेनिफर की यही समस्या है। क्रिस्टी की हम उम्र मित्र सोनल और उसकी मां वंदना की स्थिति भी यही है। सोनल के पिता व्योम अब नहीं हैं. परंतु वंदना के जीवन मूल्य, व्योम की यादें और बेटी के प्रति कर्तव्य भावना उन्हें बिखरने नहीं देती। यही जीवन मूल्य क्रिस्टी को जीवन में संघर्ष और निर्णय लेने में सहायक बनते हैं।

भारतवासियों को विदेश में बस जाने पर वहां की संस्कृति और जीवन मूल्यों में रच बस जाने से अपनी जमीन की महक नहीं भूलती. 'कौन सी जमीन अपनी' में अमेरिका में बस चुके मनजीत सिंह की आंखों में बरसों से बुढ़ापे में भारत लौट कर पंजाब में अपने गांव-घर में बसने का सपना है। इसके लिए वह अपने भाइयों को जमीने खरीदने के लिए पैसे भेजता रहता है। और जब वह अमेरिका से सब कुछ समेट गांव वापस आता है तो उसके सपने चूर चूर हो जाते हैं। पहले तो भाई-भतीजे समझते हैं वह थोड़े दिनों के लिए आया है, परंतु जब उन्हें मालूम होता है वह हमेशा के लिए लौटा है तब उनके छाती पर सांप रेंग जाता है, एक दिन वह सुनता है दोनों भाई उसके वापस न लौटने पर उसके कत्ल की साजिश रच रहे हैं। मंजीत का रंग उड़ा हुआ है। कौन सी जमीन अपनी है? वह पराई या जिसके लिए वह उम्र भर डालर

भेजता रहा। पीढ़ियों में अंतर के साथ संवेदना का क्षरण भी हो जाता है. 'कमरा नंबर 103' में कोमा में पड़ी बीमार मां का दर्द पाठक को द्रवित करने के साथ निर्मम होती जा रही पीढ़ी को सवालों के कटघरे में खड़ा करता है। बदलते समय की जटिलताएं और सच्चाइयां नग्न रूप में प्रकट होती हैं। शायद यह समृद्धता का अभिशाप है। मां-बाप अपनी संतानों की ममता में अपने देश में बेच यहां आ जाते हैं। बेटों को मिलते हैं मुफ्त के केयरटेकर-नौकर। अस्पताल के कमरे में मिसेज वर्मा की देखभाल के लिए नर्सों में संवेदना बची हुई है.

मूल्यों मान्यताओं के द्वंद्व के साथ कहानियों की निष्पत्ति आदर्शोन्मुख यथार्थ की और उन्मुख है, जो कि प्रवासी साहित्य की प्रमुख विशेषता है, अपनी जड़ों की स्मृति के कारण। कहानियों का सहज शिल्प इन्हें पठनीय बनाता है।

□□

सम्पर्क : एमडीएच 2/33, सेक्टर एच,
जानकीपुरम, लखनऊ-226021
मो. 9956398603

बदलते मानकों का आइना 'अन्तर्गाथा'

□ **अमरनाथ अजेय**

समीक्ष्य कृति- अन्तर्गाथा (उपन्यास) - रचनाकार-रामनाथ शिवेन्द्र, प्रकाशक- नेहा प्रकाशन, उल्थनपुर, नवीन शाहदरा दिल्ली, 110032

सृष्टि में जैसे-जैसे बदलाव हो रहे हैं वैसे ही मानव सभ्यता, संस्कृति व सामाजिक संरचना में भी दिनों दिन बदलाव होते दिख रहे हैं। मानव मूल्य व मान्यताएं तथा सिद्धान्त जो मानव निर्मित क्रियाकलाप हैं, वे भी सुविधाओं की परिधि में अपनी जमीन छोड़ कर भिन्न-भिन्न आडबरों में रूपान्तरित होते जा रहे हैं।

श्री रामनाथ शिवेन्द्र का उपन्यास 'अन्तर्गाथा' कुछ इन्हीं विसंगतियों पर प्रहार करता हुआ कथा का आकार लेता है। आदमी, आदमी न होकर मात्र अपनी परछाई हो गया है। प्रस्तुत उपन्यास में कथाकार, कवि, ठेकेदार, नेता जैसे कई चरित्रों का पोस्टमार्टम किया गया है। विमर्श की दृष्टि से स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, और बहुत से अन्य सभ्यतागत विमर्शों के साथ-साथ मानव जीवन में घटित होने वाले विडम्बनाओं का विश्लेषण किया गया है, जो कथित सभ्य समाज से अन्तर्गुम्फित हैं।

कथा प्रारंभ होती है प्रवासीनाथ जी से जो एक चर्चित उपन्यासकार एवं विश्वविद्यालय के प्रवक्ता हैं तथा सुशीला और अमरेन्दर से, जो उनके निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं। प्रवासीनाथ सुशीला से नाटकीय ढंग से शारीरिक संबंध बना लेते हैं, यही नहीं शारीरिक संबंध बन जाने के बाद उन्हें लगता है कि सुशीला उनके प्रस्तावित उपन्यास की पाण्डुलिपि है। प्रवासीनाथ, सुशीला तथा अमरेन्दर के अलावा जो दूसरे चरित्र हैं उनमें एल.आर., कवि विलोचन, जगेशर, प्रधानाचार्या, बंगाली बाबू की बिटिया, जद्दो भाई, बाहुबली विधायक, सुशीला के चाचा, सांसद तथा सुदर्शन जी आदि। इन्हीं चरित्रों के क्रियाकलापों के विवरणों व विश्लेषणों के द्वारा अन्तर्गाथा की औपन्यासिक जमीन तैयार की गई है। आई.ए.एस. के समकक्ष अधिकारी की बिटिया सुशीला इन्हीं चरित्रों के विभिन्न प्रसंगों पर केन्द्रित एक फिल्म भी बनाती है।

वैसे प्रवासीनाथ के लिए पप्पू चाय के बैठकबाज चरित्रों का कोई मतलब नहीं होता पर सुशीला उन्हीं चरित्रों का मूल्य स्थापित करने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर देती है जो उपन्यास के केन्द्रीय विषय बन जाते हैं। प्रवासीनाथ के लिए वामपंथ या उसकी अवधारणाएं उतना महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि एल.आर तथा जगेशर के लिए हैं। जबकि जगेशर तो प्रवासीनाथ की वामधारा की चेतना से ही प्रभावित होकर चारु मजूमदार के संगठन के साथ जुड़ा था पर उस रास्ते के अन्तर्विरोधों से दुखी होकर बनारस लौट आया था। यही हाल एल.आर. का भी था। वामउग्रवाद के अन्तर्विरोधों का शिकार होने के बाद उसने भी संगठन छोड़ दिया था। जगेशर ने बनारस में दूध बेचने का रोजगार डाल लेने के बाद खुद पान की गोमटी खोल लिया था पर एल.आर. बिना काम के था, खालीपन मिटाने के लिए वामपंथी धारा की एक पत्रिका निकालता था। वह कामरेडों को दो खानों में बांटता था, चुनाव लड़ने वालों को मठी कामरेड मानता तथा चुनाव का विरोध करने वालों को हठी कामरेड। चरित्रों की विभिन्नताओं के कारण पप्पू चाय की दुकान के बैठकबाजों का जुड़ाव बना रहता है। प्रवासीनाथ की लेखकीय काम के बावत अपनी प्रस्थापनायें हैं,..... तरीके हैं....

'प्रवासीनाथ थे कि बिना सुरा सुन्दरी के न कुछ लिख पाते थे न किसी का कोई काम करा पाते थे। वे इसे लिखने का रोग मानते थे। सुरा, सुन्दरी से बचने के लिए जिन लोगों ने कुछ न लिखने की कसम खा रखी है, उन्हें वे बहुत अच्छा मानते तथा खुद को बुरा। अपने खास मित्रों से वे सगर्व कहते भी....